15-7-67 ओम् शान्ति। रात्री क्लास

बच्चे अनुभव सुनाते है आगे भक्ति मे थे अब ज्ञान मे है। गोया सदगति मे जा रेह है। यह ज्ञान मार्ग है। वो भक्ति मार्ग है। अनुभव तो सुनाना होता है नां। अब हम पवित्र रेह रेह है। बाप से वर्सा लेने लिये। बाप स सबको जाना है। सबको वापस फिर आना है। यह तुम्हारी बुधी मे है। जो भी एक्टर्स है वो सब कैसे आते है कैसे बुधी को पाते है फिर चले जाते है। पहले-2 छोटा झाड ही आवेगा। यहां वाले जो जावेंगे सभी को इकट्ठा नही आवेंगे नां। यह झाड निराकारी जाकर बनेगा। फिर साकारी झाड होगा। वो झाड सिर्फ सूर्यवंशी। बच्चो को समझाना बहुत सहज है। जो जिस धर्म का है उनको स्थापक फिर भी उसी समय पर आवेगा। पीछे वाले आते ही पिछाडी मे है। वो इतना सुख ले नही सकते है। ड्रामा बना ही हुआ है। तुम बच्चो को डिटेल मे समझानी मिलती है। बाप की याद तो अति सहज है। याद और वर्सा। बच्चो को ही सभी को समझाना होता है। वर्से की बात है। नां ड्रामा की नां सा0 की नां ही परमात्मा की। सा0 की बात उठती है। अपना तो काम है बाप और बाप के वर्से से। जितना-2 जो अच्छी रीती निश्चय बुधी होते जावेंगे तुम समझ जावेंगे कि यह शुरू से भक्ति करते पीछे आते है। भक्ति करने वाले पीछे आवेंगे। भक्ति का हिसाब जरूर लगा रहता है। तब ही गाया जाता है कि आत्मा परमात्मा अलग रहे ... बच्चो को पुरुषार्थ अभी सतोप्रधान बनने का ही करना है। और हर एक को बाप का परिचय देना है। सर्विस मे कब भी तंग नही होना है। छोटो को भी बडो को भी सर्विस करनी है। बडे-2 दुकानो पर अच्छे ही समझाने वाले रखेंगे। जैसे-2 कल्प पहले स्थापना हुई है अब भी होती रेहगी। खुशी से ही सर्विस मे लगना चाहिये। तंग नहीं होना चाहिये। स्टुडण्टस को पढ कर पास होना है। पढना अलग है। लडना झगडना अलग है। वेस्ट टाईम नही करना है। नाराज होकर बैठ नही जाना चाहिये। फलाने से यह हुआ उसने यह कहा क्यो कहा को रूठ कर नही बैठना चाहिये। मुरली भी जरूर पढनी चाहिये। उसमे सर्विस की बहुत युक्तियां मिलती है। बच्चो को हुलास मे आया रहना चाहिये। खुशी का पारा चढना चाहिये। बाप जो स्वर्ग का मालिक बनाते है तो खुशी होनी चाहिये। बडे आदमी पास जन्म लेने वाले को तो खुश होना चाहिये नां। यह है बाप से वर्सा लेने की युक्ति। बच्चो को पढना जरूरी है। रोज मुरली पढना धारन करना है। घर मे घाटा है फायदा है। धन्धा ठीक है वा नही है इन बातो का ज्ञान से तो वास्ता ही नही है। गरीब है उनको

******* * *************************

भी कहा जाता है बाप का परिचय दो। जो बेहद का बाप होकर गया है भारत को स्वर्ग बना कर गये फिर रावण ने छीन लिया। अब फिर बाप कहते है कि पावन बनो। यह कोई हद की बात नही है। बेहद की बात है। अब तुम जानते हो बाबा हमको नये विश्व के लिये पुरुषार्थ करवा रेह है। याद के बल से पवित्र होने से ही हम पवित्र दुनियां का मालिक बनते है। यह है याद। योग अक्षर भी नही बाप की याद अक्षर लवली है। बाप ने कहा है कि मामेकम याद करो। ऐसा नही कहा है कि मामेकम योग लगाओं। याद कहा है। सतोप्रधान आये थे। फिर यहीं से सतोप्रधान बन कर जाना है। वापस कोई भी जा नही सकते है। सा0 की सभी बातें भक्तिमार्ग की है। यहां नां आत्मा अपना सा0 कर सकती है। नां ही परमात्मा बाप का। बाप ने समझाया है मै भी बिन्दी हूं तुम भी बिन्दी हो। उसमे ही सारा ज्ञान है। ऐसे नही कि मै बडा हूं। यह नही समझना चाहिये। परम-आत्मा बडा है। परम माना दूर से दूर रहने वाला। ड्रामा मे राज भी अच्छा रखा हुआ है। पतितों को पावन नही तो कैसे बनावे। ऐसी बाते याद करके खुशी मे रहना चाहिये। तुम बच्चो को तो शिव बाबा ने एडाप्ट किया है। राजयोग सिखा रहे है। तुम समझेंगे कि ईश्वर यह रथ भाग्यशाली है। 84 जन्म लिये है। फिर बाप ने प्रवेश कर यह नाम रखा है। सब जानते है कि यह साधारन तन था। इनमे बाबा प्रवेश कर नाम बदलाया है। नहीतो ब्रहमा का बाप चाहिये। वो फिर कहां से आवे। तीन बच्चो मे से भी एक ब्रहमा ही यहां का है। ऐसे नही कि अभी तीनो को रचा है ... नही ... ओम